यात्रियों के नज़रिए

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» यात्रियों और उनके वृत्तांतों का महत्व

प्रश्न 1 (आसान). यात्रा वृत्तांत किन्हें कहते हैं?
उत्तर – यात्रा के अनुभवों और देखी गई चीज़ों के बारे में लिखी गई जानकारी को यात्रा वृत्तांत कहते हैं।

प्रश्न 2 (आसान). दसवीं से सत्रहवीं सदी के तीन प्रमुख यात्रियों के नाम बताओ जिनके बारे में हम इस अध्याय में पढ़ेंगे।
उत्तर – अल-बिरूनी, इब्न बतूता, फ्रांस्वा बर्नियर।

प्रश्न 3 (मध्यम). यात्री अक्सर ऐसी कौन सी चीज़ें अपने वृत्तांतों में लिखते थे जो स्थानीय लेखक नहीं लिखते होंगे और क्यों?
उत्तर – यात्री नारियल या पान जैसी स्थानीय, रोजमर्रा की चीज़ों को भी लिखते थे क्योंकि वे उनके लिए नई और असामान्य थीं। स्थानीय लेखक इन्हें सामान्य मानकर नहीं लिखते थे।

प्रश्न 4 (कठिन). यात्रियों के वृत्तांत इतिहास को समझने में क्यों इतने महत्वपूर्ण हैं? कोई दो कारण बताओ।
उत्तर – पहला, वे एक बाहरी और निष्पक्ष (impartial) दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। दूसरा, वे उन छोटी-छोटी सामाजिक और सांस्कृतिक डिटेल्स को दर्ज करते हैं जो स्थानीय लोगों के लिए इतनी आम थीं कि उन्हें लिखने लायक नहीं समझा जाता था।

» अल-बिरूनी: एक बहुभाषी विद्वान और 'किताब-उल-हिन्द'

प्रश्न 5 (आसान). अल-बिरूनी का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – ख़्वारिज़्म (आज के उज़्बेकिस्तान में)

प्रश्न 6 (आसान). अल-बिरूनी की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक का नाम क्या है?
उत्तर – 'किताब-उल-हिन्द'

प्रश्न 7 (मध्यम). अल-बिरूनी भारत के बारे में जानने में क्यों रुचि रखने लगा?
उत्तर – गज़नी में रहते हुए उसकी भारत के प्रति रुचि बढ़ी, खासकर जब आठवीं शताब्दी से संस्कृत की कई किताबें अरबी में अनुवादित हो रही थीं और पंजाब के गज़नवी साम्राज्य का हिस्सा बनने के बाद स्थानीय लोगों से संपर्क बढ़ गया था।

प्रश्न 8 (कठिन). 'किताब-उल-हिन्द' की लेखन शैली की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?
उत्तर – इसकी भाषा सरल और स्पष्ट थी। प्रत्येक अध्याय में सामान्यतः एक प्रश्न होता था, फिर संस्कृतवादी परंपराओं पर आधारित वर्णन और अंत में अन्य संस्कृतियों के साथ तुलना की जाती थी। विद्वान इसे अल-बिरूनी के गणित की ओर झुकाव का परिणाम मानते हैं।

» 'किताब-उल-हिन्द' की संरचना और विषयवस्तु

प्रश्न 9 (आसान). 'किताब-उल-हिन्द' किस भाषा में लिखी गई थी?
उत्तर – अरबी भाषा में

प्रश्न 10 (आसान). इस किताब में भारत से जुड़े कितने अध्याय थे?
उत्तर – लगभग 80 अध्याय

प्रश्न 11 (मध्यम). अल-बिरूनी ने अपनी किताब लिखने में किस खास शैली का प्रयोग किया था?
उत्तर – प्रश्न से शुरुआत, फिर संस्कृत परंपराओं पर वर्णन और अंत में अन्य संस्कृतियों से तुलना।

प्रश्न 12 (कठिन). 'किताब-उल-हिन्द' में कौन-कौन से विषय शामिल थे? किन्हीं तीन का उल्लेख करो।
उत्तर – धर्म और दर्शन, त्योहार, खगोल-विज्ञान, रीति-रिवाज, सामाजिक-जीवन, भार-तौल, मूर्तिकला, कानून आदि। (कोई भी तीन)

» अल-बिरूनी द्वारा भारतीय समाज को समझना: बाधाएं और जाति व्यवस्था

प्रश्न 13 (आसान). अल-बिरूनी ने भारतीय समाज को समझने में पहली बाधा किसे बताया?
उत्तर – भाषा को।

प्रश्न 14 (आसान). अल-बिरूनी ने जाति व्यवस्था की किस मान्यता को अस्वीकार किया?
उत्तर – अपवित्रता की मान्यता को।

प्रश्न 15 (मध्यम). अल-बिरूनी ने भारत की जाति व्यवस्था को समझाने के लिए किन ग्रंथों का सहारा लिया?
उत्तर – उसने वेदों, पुराणों, भगवद्गीता, पतंजलि की कृतियों और मनुस्मृति जैसे ब्राह्मणवादी ग्रंथों का सहारा लिया।

प्रश्न 16 (कठिन). अल-बिरूनी के अनुसार, अपवित्रता की अवधारणा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध क्यों थी?
उत्तर – अल-बिरूनी ने कहा कि हर वो चीज़ जो अपवित्र होती है, वो अपनी पवित्रता को वापस पाने की कोशिश करती है और सफल भी होती है। जैसे सूर्य हवा को शुद्ध करता है और समुद्र में नमक पानी को सड़ने से बचाता है। उसने तर्क दिया कि अगर ऐसा नहीं होता, तो पृथ्वी पर जीवन असंभव होता, इसलिए जाति व्यवस्था में अपवित्रता का विचार प्रकृति के खिलाफ था।

» इब्न बतूता: एक आरंभिक विश्व-यात्री और उसका 'रिहला'

प्रश्न 17 (आसान). इब्न बतूता किस देश का मूल निवासी था?
उत्तर – मोरक्को

प्रश्न 18 (आसान). इब्न बतूता के यात्रा वृत्तांत का क्या नाम है?
उत्तर – 'रिहला'

प्रश्न 19 (मध्यम). इब्न बतूता ने किस शताब्दी में यात्राएँ कीं और उसकी 'रिहला' किस भाषा में लिखी गई थी?
उत्तर – इब्न बतूता ने 14वीं शताब्दी में यात्राएँ कीं, और उसकी 'रिहला' अरबी भाषा में लिखी गई थी।

प्रश्न 20 (कठिन). इब्न बतूता को 'आरंभिक विश्व-यात्री' क्यों कहा जाता है? उसके ज्ञानार्जन की इच्छा किस प्रकार अल-बिरूनी से भिन्न थी?
उत्तर – इब्न बतूता को 'आरंभिक विश्व-यात्री' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसने 14वीं शताब्दी में, जब यात्रा करना बेहद कठिन था, विभिन्न महाद्वीपों की व्यापक यात्राएँ कीं। उसकी ज्ञानार्जन की इच्छा अल-बिरूनी से इस मायने में भिन्न थी कि अल-बिरूनी ने ज्ञान मुख्य रूप से ग्रंथों और विद्वानों के माध्यम से प्राप्त किया, जबकि इब्न बतूता ने किताबों के बजाय यात्राओं और प्रत्यक्ष अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करने को अधिक महत्व दिया।

» इब्न बतूता द्वारा भारतीय उत्पादों और शहरों का वर्णन

प्रश्न 21 (आसान). इब्न बतूता ने भारतीय शहरों की कौन सी दो मुख्य विशेषताएँ बताईं?
उत्तर – इब्न बतूता ने भारतीय शहरों को घनी आबादी वाला और समृद्ध बताया।

प्रश्न 22 (आसान). इब्न बतूता ने नारियल को किस जानवर के बाल जैसा बताया था?
उत्तर – उसने नारियल के रेशों को घोड़े के बाल जैसा बताया था।

प्रश्न 23 (मध्यम). इब्न बतूता के लिए नारियल और पान 'असामान्य' क्यों थे, जबकि भारतीयों के लिए वे सामान्य थे?
उत्तर – इब्न बतूता मोरक्को से आया था, जहाँ नारियल और पान नहीं उगते थे, इसलिए उसके लिए ये अनोखे थे। भारतीयों के लिए, ये रोज़मर्रा की चीज़ें थीं, जो उनके जीवन का हिस्सा थीं, इसलिए उन्हें ये सामान्य लगती थीं।

प्रश्न 24 (कठिन). इब्न बतूता ने भारतीय कृषि प्रणाली के बारे में क्या महत्वपूर्ण अवलोकन किया?
उत्तर – उसने देखा कि भारत की ज़मीन इतनी उपजाऊ थी कि यहाँ साल में दो फसलें उगाई जाती थीं, जो उसकी अपनी मातृभूमि में असंभव था। इससे उसे भारतीय अर्थव्यवस्था की समृद्धि का अंदाज़ा हुआ।

» इब्न बतूता: भारत की संचार प्रणाली और व्यापार

प्रश्न 25 (आसान). इब्न बतूता ने भारत की किस प्रणाली की कार्यकुशलता देखकर आश्चर्य व्यक्त किया?
उत्तर – भारत की डाक प्रणाली की कार्यकुशलता देखकर।

प्रश्न 26 (आसान). अश्व डाक व्यवस्था को क्या कहा जाता था?
उत्तर – अश्व डाक व्यवस्था को 'उलुक' कहा जाता था।

प्रश्न 27 (मध्यम). पैदल डाक व्यवस्था की क्या विशेषता थी जो उसे अश्व डाक से भी तेज़ बनाती थी?
उत्तर – पैदल डाक व्यवस्था में हर एक मील के एक-तिहाई हिस्से पर यानी हर तीन मील पर संदेशवाहक तैयार रहते थे। वे घंटियों वाली छड़ का प्रयोग करते थे और पत्र को एक-दूसरे को पास करते हुए बहुत तेज़ी से दौड़ते थे।

प्रश्न 28 (कठिन). इब्न बतूता के वर्णन के अनुसार, भारत की संचार प्रणाली ने व्यापारियों और गुप्तचरों को किस प्रकार लाभ पहुँचाया?
उत्तर – इस कुशल प्रणाली से व्यापारियों के लिए लंबी दूरी तक सूचना और माल भेजना संभव हुआ। गुप्तचरों की खबरें भी सुल्तान तक बहुत तेज़ी से पहुँच जाती थीं, जिससे राज्य को महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मदद मिलती थी। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की जीवंतता को भी दर्शाता है।

» फ्रांस्वा बर्नियर: 'पूर्व' और 'पश्चिम' की तुलना

प्रश्न 29 (आसान). फ्रांस्वा बर्नियर किस देश के रहने वाले थे?
उत्तर – फ्रांस

प्रश्न 30 (आसान). बर्नियर भारत में किसकी तलाश में आए थे?
उत्तर – अवसरों की तलाश में (मुग़ल साम्राज्य में)

प्रश्न 31 (मध्यम). बर्नियर मुग़ल दरबार से किन दो मुख्य भूमिकाओं में जुड़े थे?
उत्तर – पहले दारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में, और बाद में दानिशमंद ख़ान के साथ बुद्धिजीवी तथा वैज्ञानिक के रूप में।

प्रश्न 32 (कठिन). बर्नियर अपनी भारत यात्रा के दौरान देखी गई चीजों की तुलना किससे करते थे? और इस तुलना में वे भारत को कैसा बताते थे?
उत्तर – बर्नियर भारत में जो देखते थे, उसकी तुलना यूरोपीय स्थिति से करते थे। इस तुलना में वे अक्सर भारत की स्थिति को यूरोप की तुलना में 'दयनीय' बताते थे।

» बर्नियर का भू-स्वामित्व का प्रश्न और 'अपविकसित' पूर्व का चित्रण

प्रश्न 33 (आसान). बर्नियर ने भारत और यूरोप के बीच किस मुख्य अंतर पर जोर दिया?
उत्तर – भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव।

प्रश्न 34 (आसान). बर्नियर के अनुसार, मुगल साम्राज्य में ज़मीन का असली मालिक कौन था?
उत्तर – सम्राट (राजा)।

प्रश्न 35 (मध्यम). बर्नियर ने क्यों सोचा कि राजकीय भू-स्वामित्व से कृषि का पतन होता है?
उत्तर – क्योंकि भू-धारकों को अपनी ज़मीन पर मालिकाना हक़ का भरोसा नहीं था, इसलिए उन्होंने उत्पादन बढ़ाने या उसमें निवेश करने में रुचि नहीं ली।

प्रश्न 36 (कठिन). बर्नियर के 'अपविकसित' पूर्व के चित्रण का क्या मतलब है, और क्या यह पूरी तरह सही था?
उत्तर – इसका मतलब है कि बर्नियर ने भारत को आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़ा हुआ देश बताया। हालांकि यह उसका एकतरफा नज़रिया था, जो उसकी यूरोपीय सोच से प्रभावित था और पूरी तरह से सही नहीं था। कई मुगल दस्तावेज़ों से भी उसकी बात पूरी तरह से मेल नहीं खाती।

» बर्नियर का ग्रामीण समाज, कारखाने और नगरीय केंद्र

प्रश्न 37 (आसान). बर्नियर के अनुसार ग्रामीण समाज की मुख्य समस्या क्या थी?
उत्तर – किसानों की व्यापक गरीबी।

प्रश्न 38 (आसान). बर्नियर ने मुगलकालीन शहरों के लिए किस शब्द का प्रयोग किया?
उत्तर – 'शिविर नगर'।

प्रश्न 39 (मध्यम). बर्नियर ने राजकीय कारखानों में काम करने वाले शिल्पकारों की स्थिति के बारे में क्या देखा?
उत्तर – उसने देखा कि शिल्पकार सुबह आते थे और पूरे दिन काम करते थे, लेकिन उनकी जीवन स्थितियों में कोई सुधार नहीं होता था। उसे लगा कि उनमें अपने जीवन को बेहतर बनाने की इच्छा ही नहीं थी, क्योंकि सब कुछ राजकीय नियंत्रण में था।

प्रश्न 40 (कठिन). बर्नियर का ग्रामीण समाज, कारखाने और नगरीय केंद्रों का चित्रण किस प्रकार 'अतिसरलीकृत' था?
उत्तर – बर्नियर का चित्रण अतिसरलीकृत था क्योंकि उसने केवल गरीबी और निर्भरता पर ज़ोर दिया, लेकिन उसने उत्पादन केंद्रों, व्यापारिक नगरों, बंदरगाह नगरों और धार्मिक केंद्रों जैसे अन्य प्रकार के समृद्ध शहरों की अनदेखी की। उसने भारतीय समाज की जटिलताओं और विविधताओं को पूरी तरह से नहीं समझा, बल्कि यूरोप से तुलना करते हुए एकतरफ़ा नज़रिया प्रस्तुत किया।

» यात्रियों के वृत्तांतों में महिलाएं: दासियां, सती और श्रमिक

प्रश्न 41 (आसान). इब्न बतूता के अनुसार दासियों का मुख्य उपयोग क्या था?
उत्तर – घरेलू काम, मनोरंजन और सुल्तान के लिए जासूसी।

प्रश्न 42 (आसान). बर्नियर ने किस कुरीति पर विशेष ध्यान दिया?
उत्तर – सती प्रथा पर।

प्रश्न 43 (मध्यम). यात्रियों के वृत्तांतों से हमें महिलाओं की श्रमिक भूमिका के बारे में क्या पता चलता है?
उत्तर – महिलाएँ कृषि और व्यापारिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं, हालांकि यात्रियों ने इस पर कम ध्यान दिया।

प्रश्न 44 (कठिन). क्या इब्न बतूता और बर्नियर के वृत्तांतों में महिलाओं की पूरी स्थिति का निष्पक्ष चित्रण मिलता है? अपने विचार व्यक्त करें।
उत्तर – नहीं, ये वृत्तांत पूरी तरह निष्पक्ष नहीं हैं। यात्री अक्सर अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर चीज़ों को देखते थे और सामान्य महिलाओं के जीवन पर कम ध्यान देते थे। उनके वर्णन अक्सर सामाजिक कुरीतियों या असाधारण स्थितियों पर केंद्रित होते थे, जबकि रोज़मर्रा के जीवन में महिलाओं की व्यापक भूमिका (जैसे कृषि या व्यापार में) अक्सर अनदेखी कर दी जाती थी।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. प्राचीन यात्रियों के वृत्तांत हमें किस तरह अतीत के समाज को समझने में मदद करते हैं?

› पहला, ये वृत्तांत उन लोगों ने लिखे जो हमारे समाज से अलग पृष्ठभूमि के थे।

› दूसरा, वे यहाँ की आम चीज़ों को भी अद्भुत मानते थे और विस्तार से लिखते थे, जो हमारे अपने लेखक शायद नहीं लिखते।

› तीसरा, इन वृत्तांतों से हमें उस समय के रीति-रिवाजों, खान-पान, कपड़ों और आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

› चौथा, ये हमें दिखाते हैं कि उस समय विभिन्न संस्कृतियों के बीच कैसे संबंध थे।

उत्तर – यात्रियों के वृत्तांत अतीत के समाज को समझने के लिए एक बाहरी, विस्तृत और अनमोल जानकारी का स्रोत प्रदान करते हैं, जो स्थानीय लेखकों द्वारा अक्सर छोड़ी गई बारीक डिटेल्स को सामने लाते हैं।

उदाहरण 2. अल-बिरूनी कौन था और उसने भारत के अध्ययन में क्या महत्वपूर्ण योगदान दिया?

› पहला कदम: अल-बिरूनी एक बहुभाषी विद्वान था, जिसका जन्म 973 ई. में ख़्वारिश्म (आज के उज़्बेकिस्तान में) में हुआ था। वह कई भाषाओं, जैसे सीरियाई, फारसी, हिब्रू और संस्कृत का ज्ञाता था।

› दूसरा कदम: वह महमूद गज़नवी के साथ बंधक के रूप में गज़नी आया था। यहीं पर उसकी भारत के प्रति गहरी रुचि विकसित हुई।

› तीसरा कदम: उसने भारत में ब्राह्मण पुरोहितों और विद्वानों के साथ कई वर्ष बिताए, जिनसे उसने संस्कृत, धर्म और भारतीय दर्शन का गहन ज्ञान प्राप्त किया।

› चौथा कदम: उसने अपनी प्रसिद्ध अरबी कृति 'किताब-उल-हिन्द' लिखी, जो धर्म, दर्शन, त्योहारों, रीति-रिवाजों, सामाजिक जीवन, खगोल-विज्ञान जैसे लगभग 80 अध्यायों में भारत का विस्तृत वर्णन करती है। यह किताब भारत को समझने का एक अमूल्य स्रोत है।

उत्तर – अल-बिरूनी एक बहुभाषी विद्वान था जिसने ग्यारहवीं शताब्दी में भारत का गहन अध्ययन किया और 'किताब-उल-हिन्द' नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक के माध्यम से भारतीय संस्कृति, धर्म, विज्ञान और समाज का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया, जिससे वह भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया।

उदाहरण 3. अल-बिरूनी ने अपनी किताब 'किताब-उल-हिन्द' में भारत के किन-किन विषयों पर जानकारी दी है और इसे लिखने की उसकी खास शैली क्या थी?

› सबसे पहले, यह अरबी भाषा में लिखी गई एक बहुत बड़ी किताब है, जिसकी भाषा सरल और साफ़ थी।

› इसमें लगभग 80 अध्याय थे, जो बहुत सारे विषयों पर थे – जैसे यहाँ के धर्म और दर्शन, त्योहार कैसे मनाए जाते थे, खगोल-विज्ञान यानी तारे-ग्रहों के बारे में क्या जानते थे लोग, कीमिया यानी रसायन विज्ञान, यहाँ के रीति-रिवाज और परंपराएँ, लोगों का सामाजिक जीवन कैसा था, भार-तौल और नापने के तरीके, मूर्तिकला और कानून जैसी कई बातें इसमें शामिल थीं।

› इसकी सबसे खास बात थी इसकी संरचना। अल-बिरूनी ने ज़्यादातर अध्यायों में एक ही तरीका अपनाया: सबसे पहले वो एक 'प्रश्न' पूछता था।

› फिर, वो उस प्रश्न का उत्तर 'संस्कृतवादी परंपराओं' यानी भारतीय ग्रंथों और ज्ञान के आधार पर विस्तार से देता था।

› और आखिर में, वो उसकी 'तुलना' दूसरी संस्कृतियों, जैसे यूनानी या फ़ारसी, के साथ करता था ताकि पाठक बातों को बेहतर समझ सकें। ये तरीका ऐसा था जैसे गणित का कोई सवाल हल करते हैं, बहुत ही स्पष्ट और क्रमबद्ध।

› इससे हमें पता चलता है कि वह सिर्फ भारत की जानकारी नहीं दे रहा था, बल्कि उसे बाकी दुनिया से जोड़कर समझा रहा था।

उत्तर – अल-बिरूनी ने अपनी 'किताब-उल-हिन्द' में धर्म, दर्शन, त्योहारों, खगोल-विज्ञान, रीति-रिवाजों, सामाजिक-जीवन, भार-तौल और कानून जैसे विषयों पर विस्तार से लिखा। इसकी विशिष्ट लेखन शैली में प्रत्येक अध्याय एक प्रश्न से शुरू होता था, फिर संस्कृतवादी परंपराओं पर आधारित वर्णन होता था और अंत में अन्य संस्कृतियों से तुलना की जाती थी।

उदाहरण 4. अल-बिरूनी ने भारतीय समाज को समझने में किन तीन मुख्य बाधाओं का जिक्र किया है?

› पहला, भाषा की समस्या: अल-बिरूनी ने देखा कि संस्कृत भाषा, अरबी और फारसी से बहुत अलग थी, इसलिए विचारों और सिद्धांतों का एक भाषा से दूसरी में अनुवाद करना बहुत मुश्किल था।

› दूसरा, धार्मिक भिन्नता: भारत के धर्म और पूजा-पाठ के तरीके, अल-बिरूनी के अपने धर्म से बहुत अलग थे, जिससे समझने में परेशानी हुई।

› तीसरा, भारतीय लोगों का अभिमान: अल-बिरूनी को लगा कि भारतीय लोग अक्सर सोचते थे कि उनके पास जो ज्ञान है, वह दुनिया में सबसे अच्छा है और वे दूसरों से कुछ सीखना नहीं चाहते थे।

› इन्हीं तीन कारणों से अल-बिरूनी को भारतीय समाज की गहराई तक पहुंचने में चुनौतियां आईं।

उत्तर – अल-बिरूनी ने भारतीय समाज को समझने में तीन मुख्य बाधाएं बताईं: भाषा की भिन्नता, धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता, और भारतीयों का अभिमान।

उदाहरण 5. इब्न बतूता ने अपने जीवन में कौन सा प्रमुख कार्य किया और उसके यात्रा वृत्तांत का नाम क्या था?

› पहला कदम, हम समझेंगे कि इब्न बतूता कौन था। वह एक मोरक्को का यात्री था जिसे ज्ञान किताबों से ज्यादा यात्राओं से मिलता था।

› दूसरा कदम, उसने बहुत लंबी यात्राएँ कीं और भारत भी आया।

› तीसरा कदम, उसने अपनी सभी यात्राओं का अनुभव एक किताब में लिखा।

› चौथा कदम, इस किताब को अरबी भाषा में 'रिहला' कहा गया।

उत्तर – इब्न बतूता ने एक आरंभिक विश्व-यात्री के रूप में व्यापक यात्राएँ कीं। उसके यात्रा वृत्तांत का नाम 'रिहला' था।

उदाहरण 6. इब्न बतूता ने भारत में जिन दो मुख्य उत्पादों को 'असामान्य' (unusual) बताया, उनके नाम लिखिए और उसके वर्णन को संक्षेप में समझाइए।

› पहला उत्पाद था 'नारियल'। इब्न बतूता ने नारियल को देखकर कहा कि यह मनुष्य के सिर जैसा दिखता है और इसके रेशे घोड़े के बाल जैसे लगते हैं, जिनसे रस्सी बनाई जाती है।

› दूसरा उत्पाद था 'पान'। उसने देखा कि लोग पान की पत्तियां खाते हैं और यह उनके मुँह को लाल कर देता है, लेकिन इससे दांतों को कोई नुकसान नहीं होता। उसने इसे एक तरह का 'फल' या 'मसाला' समझा जो लोग भोजन के बाद खाते थे।

उत्तर – इब्न बतूता ने नारियल और पान को भारत के दो असामान्य उत्पाद बताया। नारियल को उसने इंसान के सिर जैसा और पान को एक ऐसी पत्ती बताया जो मुँह को लाल करती है।

उदाहरण 7. इब्न बतूता ने भारत में कितने प्रकार की डाक व्यवस्था का वर्णन किया है? उनके नाम और मुख्य विशेषताएँ बताएँ।

› सबसे पहले, हमें यह याद करना होगा कि इब्न बतूता ने अपनी 'रिहला' में भारत की डाक प्रणाली के बारे में क्या कहा है।

› उसने बताया कि भारत में दो मुख्य प्रकार की डाक व्यवस्थाएँ थीं।

› पहला प्रकार था 'अश्व डाक व्यवस्था', जिसे 'उलुक' कहा जाता था। इसकी खासियत थी कि हर चार मील पर राजकीय घोड़े तैनात होते थे, जो संदेशों को तेज़ी से ले जाते थे।

› दूसरा प्रकार था 'पैदल डाक व्यवस्था', जिसे 'दावा' कहा जाता था। यह और भी तेज़ थी, क्योंकि हर एक मील के एक-तिहाई हिस्से पर यानी हर तीन मील पर घनी आबादी वाले गाँवों के बाहर तीन मंडप होते थे जहाँ संदेशवाहक तैयार बैठे रहते थे। उनके पास घंटियों वाली छड़ होती थी और वे पत्र को एक से दूसरे को पास करते हुए बहुत तेज़ी से दौड़ते थे।

उत्तर – इब्न बतूता ने भारत में दो प्रकार की डाक व्यवस्था का वर्णन किया है: 1. अश्व डाक व्यवस्था (उलुक) - हर चार मील पर घोड़ों द्वारा संचालित। 2. पैदल डाक व्यवस्था (दावा) - हर एक मील के एक-तिहाई हिस्से पर संदेशवाहकों द्वारा, जो घंटियों वाली छड़ के साथ तेज़ी से दौड़ते थे। पैदल डाक अश्व डाक से भी तीव्र थी।

उदाहरण 8. फ्रांस्वा बर्नियर भारत में कितने वर्षों तक रहे और उनके दो मुख्य पेशे क्या थे?

› पहला कदम: याद करो कि बर्नियर कब से कब तक भारत में थे। यह 1656 से 1668 तक का समय था।

› दूसरा कदम: इन सालों को घटाकर कुल वर्ष निकालो। 1668 - 1656 = 12 वर्ष।

› तीसरा कदम: बर्नियर के पेशे याद करो। वह एक चिकित्सक थे और एक इतिहासकार भी।

› चौथा कदम: यह भी याद रखो कि वह एक राजनीतिक दार्शनिक भी थे।

› उत्तर को एक साथ लिखो।

उत्तर – फ्रांस्वा बर्नियर भारत में 12 वर्षों तक रहे। वह मुख्य रूप से एक चिकित्सक, दार्शनिक और इतिहासकार थे।

उदाहरण 9. बर्नियर के अनुसार मुगल साम्राज्य में भू-स्वामित्व की क्या समस्या थी और इसका समाज पर क्या असर पड़ा?

› बर्नियर का मानना था कि मुगल साम्राज्य में निजी भू-स्वामित्व नहीं था, यानी ज़मीन का मालिक कोई व्यक्ति विशेष नहीं होता था।

› उसकी नज़र में, ज़मीन का एकमात्र मालिक सम्राट था, जो इसे अपने अमीरों और सरदारों में बांटता था।

› इस वजह से, जो लोग ज़मीन पर खेती करते थे या उसे इस्तेमाल करते थे, उन्हें यह विश्वास नहीं था कि ये ज़मीन उनकी अपनी है या उनके बच्चों को मिलेगी।

› परिणामस्वरूप, किसानों और भू-धारकों ने ज़मीन की उत्पादकता बढ़ाने या उसमें दीर्घकालिक निवेश करने में कोई रुचि नहीं दिखाई।

› बर्नियर के अनुसार, इसी वजह से कृषि का विनाश हुआ, किसानों का बहुत शोषण हुआ और समाज में गरीबी और जीवन स्तर में गिरावट आई।

› इसलिए, उसने भारत को एक 'अपविकसित' और गरीब 'पूर्व' के रूप में चित्रित किया, जहाँ शासक बहुत अमीर थे और बाकी सब गरीब।

› उसने यह भी चेतावनी दी कि यदि यूरोपीय शासक मुगल ढांचे का पालन करेंगे, तो उनके राज्य भी रेगिस्तान बन जाएंगे।

उत्तर – बर्नियर के अनुसार, मुगल साम्राज्य में निजी भू-स्वामित्व के अभाव के कारण उत्पादन में निवेश नहीं हुआ, जिससे कृषि का पतन हुआ, किसानों का शोषण बढ़ा, और अंततः भारत एक 'अपविकसित' और गरीब समाज बन गया।

उदाहरण 10. बर्नियर ने मुगलकालीन शहरों को 'शिविर नगर' क्यों कहा?

› बर्नियर का मानना था कि मुगल शहर राजा और उसके दरबार पर बहुत ज़्यादा निर्भर थे।

› उसने सोचा कि ये शहर तब अस्तित्व में आते थे जब राजकीय दरबार वहाँ आता था।

› और जैसे ही दरबार वहाँ से चला जाता था, ये शहर तेज़ी से कमज़ोर पड़ने लगते थे।

› उसने यह भी सुझाया कि इन शहरों की सामाजिक और आर्थिक नींव मज़बूत नहीं थी, बल्कि वे राजकीय संरक्षण पर आश्रित थे।

› इसलिए, उसने इन शहरों को 'शिविर नगर' कहा, यानी ऐसे शहर जो अस्थायी शिविरों की तरह थे।

उत्तर – बर्नियर ने मुगलकालीन शहरों को 'शिविर नगर' कहा क्योंकि उसका मानना था कि ये शहर राजकीय दरबार के आगमन पर बनते थे और उसके जाने पर पतनोन्मुख हो जाते थे, उनकी आर्थिक और सामाजिक नींव राजकीय संरक्षण पर निर्भर थी।

उदाहरण 11. इब्न बतूता और बर्नियर के वृत्तांतों में महिलाओं की किन मुख्य भूमिकाओं और स्थितियों का वर्णन मिलता है? स्पष्ट कीजिए।

› पहला, इब्न बतूता ने दासियों के बारे में बताया कि उन्हें बाज़ारों में बेचा जाता था और भेंट में दिया जाता था। सुल्तान की सेवा में कुछ दासियाँ संगीत और गायन में निपुण होती थीं, और कुछ को जासूसी के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था।

› दूसरा, बर्नियर ने सती प्रथा का विस्तृत वर्णन किया। उसने देखा कि कुछ महिलाएँ स्वेच्छा से सती हो जाती थीं, लेकिन कईयों को मरने के लिए मजबूर किया जाता था।

› तीसरा, इन यात्रियों ने सामान्य श्रमिक महिलाओं पर कम ध्यान दिया, पर फिर भी पता चलता है कि महिलाएँ कृषि, और व्यापारिक गतिविधियों में भी शामिल थीं, हालाँकि उनका ज़्यादा ज़िक्र नहीं है।

उत्तर – इब्न बतूता ने दासियों (घरेलू काम, मनोरंजन, जासूसी) और बर्नियर ने सती प्रथा (मजबूरी या स्वेच्छा से) का वर्णन किया। इसके अलावा, महिलाएँ कृषि और व्यापारिक कार्यों में भी शामिल थीं, हालांकि इस पर कम ध्यान दिया गया।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• अल-बिरूनी के जीवन, उसकी भाषाओं के ज्ञान और 'किताब-उल-हिन्द' की विशेषताओं पर आधारित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछे जाते हैं। इसे अच्छे से समझ लेना।

• अल-बिरूनी की 'किताब-उल-हिन्द' की विशिष्ट संरचना और उसमें शामिल विषयों की विस्तृत श्रृंखला बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान से समझना और याद रखना।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 या 5 नंबर में पूछा जाता है, खासकर अल-बिरूनी की बाधाओं और जाति व्यवस्था पर उसके विचारों को लेकर। इसे अच्छे से तैयार करना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! इब्न बतूता के यात्रा वृत्तांत 'रिहला' का महत्व, उसकी यात्राओं की कठिनाइयाँ और भारत में उसके अनुभव, खासकर सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक से जुड़ाव, इन सब पर प्रश्न आ सकते हैं।

• इब्न बतूता के नारियल और पान के वर्णन पर आधारित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में आते हैं। उसके वर्णनों को याद रखें और क्यों वे उसके लिए 'असामान्य' थे, इस पर ध्यान दें।

• इब्न बतूता की 'रिहला' में वर्णित भारत की डाक व्यवस्था पर सीधा प्रश्न आ सकता है। उलुक और दावा के बीच अंतर को ध्यान से समझकर लिखना।

• बर्नियर के 'पूर्व' और 'पश्चिम' की तुलना वाले दृष्टिकोण पर अक्सर सीधे सवाल आते हैं, खासकर उनके यूरोपीय नज़रिए और भारत के प्रति उनके आकलन पर ध्यान देना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बर्नियर के इस भू-स्वामित्व के प्रश्न और उसके प्रभावों पर अक्सर बड़े प्रश्न आते हैं, इसलिए इसे ध्यान से समझो और याद रखो।

एक नज़र में रिवीज़न

› अल-बिरूनी: बहुभाषी विद्वान, 'किताब-उल-हिन्द' लेखक, भारतीय संस्कृति का वर्णनकर्ता।

› किताब-उल-हिन्द: सरल अरबी, 80 अध्याय, प्रश्न-वर्णन-तुलना शैली, विविध विषय।

› अल-बिरूनी: भाषा, धर्म, अभिमान बाधाएं; जाति में अपवित्रता अस्वीकृत।

› इब्न बतूता: मोरक्को का विश्व-यात्री, 'रिहला' (14वीं शताब्दी), प्रत्यक्ष अनुभव से ज्ञानार्जन।

› इब्न बतूता ने भारतीय नारियल, पान, समृद्ध शहरों, और उपजाऊ कृषि का वर्णन किया।

› भारत की डाक प्रणाली: उलुक (अश्व), दावा (पैदल); बहुत कुशल व तेज़।

› बर्नियर: फ्रांसीसी चिकित्सक, 12 वर्ष भारत, यूरोप से तुलना, भारत को दयनीय दर्शाया।

› बर्नियर: भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव, राजा मालिक, गरीबी, 'अपविकसित' पूर्व।